Part-A

(1)

GENERAL PSYCHOLOGY
B.A. (Hon's & Sub) Part-I
Paper-I

Dr. Ramendra Kumar Singh
HOD of Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
V.K.S.U. Ara (Bhojpur)
(Bihar)

प्रश्न:- प्रत्यक्षीकरण के गेस्टाल्ट सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या करें।
(Explain critically the GESTALT theory of Perception)

प्रत्यक्षीकरण एक जटिल संज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी उत्तेजना का सही एवं तात्कालिक ज्ञान प्राप्त होता है। प्रत्यक्षीकरण की व्याख्या के मनोवैज्ञानिकों ने कई सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है जिसमें प्रत्यक्षीकरण के गेस्टाल्टवादी सिद्धान्त का विशेष महत्व है। यह सिद्धान्त प्रयोगात्मक साक्ष्यों पर आधारित है।

गेस्टाल्टवाद का विकास संरचनावाद के विरोध में हुआ। इसकी नींव वरदाईमर ने (1912) ई० में जर्मनी में डाली थी। वरदाईमर अपने सहयोगी कोहलर तथा कोफ्का के साथ मिलकर Visual Perception पर एक प्रयोग किया। उस प्रयोग में वरदाईमर प्रयोगकर्ता थे तथा कोहलर एवं कोफ्का प्रयोज्य की भूमिका में थे। अपने प्रयोग में वरदाईमर ने प्रकाश की दो स्थिर रेखा को पर्दे पर बारी-बारी से जलाकर और बुझाकर अपने प्रयोज्यों को दिखाया। प्रयोग में दोनो स्थिर रेखाओं को इस तरह से अगल-बगल जलाया बुझाया जाता था कि दोनो रेखाएँ एक साथ पर्दे पर न दिखाई न पड़ सके। पहली रेखा

Scanned By Scanner Go

जब जलती थी तो दूसरी रेखा बुझ जाती थी। इसी प्रकार जब दूसरी रेखा जलती थी तो पहली बुझ जाती थी, जब प्रकाश की दोनों रेखाओं के जलने बुझने के बीच का अंतराल घटाकर प्रति सेकेंड 15 बार कर दिया गया तो दोनों में गति दिखाई पड़ने लगती। यानी रेखा प्रतीत होने लगा कि एक ही रेखा, जो चलायमान (गतिशील) होती है। Apparent movement of light पर की गई इस प्रयोग में हमारे आँखो द्वारा की गई भ्रामक अनुभूति को वरदाईमर ने phiphenomenon कहा। वरदाईमर के अनुसार रेखा उद्दीपन के विभिन्न अंशों के संगठित हो जाने के चलते होता है। दूसरी बार हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ संगठित होकर प्रत्यक्षीकरण करती है। इसीलिए हम किसी उद्दीपन का प्रत्यक्षण टुकड़ों में न करके As a whole अथवा समग्र रूप में करते है। कोई भी वस्तु अपने गुणों का सम्पूर्ण समुच्चय के रूप में प्रस्तुत होती है जिसके फलस्वरूप उस वस्तु का एक अलग और खास तरह का स्वरूप बनती है।

उस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि गेस्टाल्ट सिद्धान्त की मूल मान्यता यह है कि "किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण As a whole करते हैं न कि Part या अंश के रूप में। जब हम एक कुर्सी का प्रत्यक्षीकरण करते हैं तो पूरी कुर्सी का प्रत्यक्षीकरण एक साथ करते हैं, न कि उसकी गद्दा, पाँव या, रंग, आकार-प्रकार का अलग अलग। उसको एक दूसरा उदाहरण से भी समझ सकते हैं। मान लें हम एक आदमी का चेहरा देखते हैं तो उसके सम्पूर्ण

Scanned By Scanner Go

चेहरा का प्रत्यक्षीकरण एक साथ करते हैं, उसके बाद कहते हैं कि अमुक आदमी सुन्दर अथवा कुरूप है। हलाँकि उस आदमी का आँख, नाक, होंठ, रंग आदि मिलकर ही उसका अलग चेहरा का स्वरूप गढ़ते हैं जिसके आधार पर उसकी अपनी पहचान बनती है। यदि हम उसके चेहरा के अलग-अलग अंगों का प्रत्यक्षीकरण टूकड़ों में बाँटकर करने लगें तो उसकी पूर्ण स्वरूप का अस्तित्व विलिन हो जाएगा और उसकी पहचान एवं खासियत समाप्त हो जायेगी। इस प्रकार प्रत्यक्षीकरण की गेस्टाल्ट सिद्धान्तवादियों की मान्यता है कि "सभी अंश मिलकर ही सम्पूर्णता या समग्रता का निर्माण करते हैं तथापि सम्पूर्णता की विशेषताएँ अंश की विशेषताओं से भिन्न होती है।" प्रत्यक्षीकरण करते समय organization of the situation तथा उस उद्दीपन की पृष्ठभूमि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रत्यक्षीकरण का गेस्टाल्ट सिद्धान्त प्रयोगात्मक अध्ययनों पर आधारित है जो मुख्य रूप से चार Concept पर जोर देती है और अपने सिद्धान्त की व्याख्या करती है :-

(1) आकृति एवं पृष्ठभूमि :- प्रत्यक्षीकरण का गेस्टाल्ट सिद्धान्त प्रत्यक्षीकरण में figure and background के महत्व पर जोर देता है। उत्तेजना क्षेत्र के जिस भाग का हमें स्पष्ट ज्ञान होता है, वह आकार के रूप उभरा होता है और उत्तेजना क्षेत्र का वह भाग जो उस उत्तेजना को उत्पन्न करने में मदद करता है, उसे पृष्ठभूमि कहा जाता है। इस संदर्भ में Rubin (1915) का प्रयोग काफी महत्वपूर्ण है। आकार स्पष्ट, निश्चित, आकर्षक सतह की ओर निकला होता है। आकार एवं पृष्ठभूमि में गत्यात्मक सम्बन्ध होता है। एक परिस्थिति में आकार पृष्ठभूमि बनती है तो दूसरी स्थिति में पृष्ठभूमि भी आकार के रूप में उभर जाती है। गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिक प्रत्यक्षीकरण में Situational Phenomenon

Scanned By Scanner Go

को स्वीकार किया है।
यानी आकार एवं पृष्ठभूमि में पलटावी गुण पाया जाता है, व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण में उत्तेजना एवं वातावरण दोनों का प्रत्यक्षीकरण करता है। उससे उस उत्तेजना में संगठन आ जाता है और हम प्रत्यक्षीकरण कर लेते हैं, इस क्रिया में मस्तिष्क में दो प्रकार के बल Cohesive force तथा restraining force (अवरोधक बल) काम करता है। इस आकर्षण एवं विकर्षण द्वारा एक तरह का संगठन बनता है और खास आकृति एवं पृष्ठभूमि बनती है जिससे हम किसी चीज का प्रत्यक्षीकरण कर लेते हैं।

(2) संगठन के नियम :- गेस्टाल्टवादियों ने प्रत्यक्षीकरण में संगठन के महत्व पर बल दिया है, कोई भी उत्तेजना के विभिन्न अंश कैसे आपस में संगठित हो जाते हैं जिससे उसका प्रत्यक्षीकरण एक विशेष रूप में हम करते हैं क्योंकि उससे एक अर्थपूर्ण बन जाता है। यानी संगठन के कारण ही अर्थपूर्ण ज्ञान होता है। इसमें पूर्व अनुभूतियों का कोई विशेष योगदान नहीं होता है। संगठन के लिए दो तरह के कारक काम करते हैं।

(नोट) - इस प्रश्न का शेष भाग इस नोट्स के दूसरे भाग Part-B में भेजा जाएगा। यह नोट्स दो भागों में बंटा है जो कुल सात पेजों में है। अतः Part-A और Part-B को मिलाकर पढ़ेंगे। सम्पूर्ण उत्तर दोनों को मिलाकर ही होगा, अगर किसी भी छात्र को कोई दिक्कत हो रही है मेरे मोबाइल, व्हाट्स एप पर सम्पर्क कर सकता है। प्रश्न पूछ सकता है

नं० - 62 0042 358।
डॉ० रमेन्द्र कु० सिंह
मनोविज्ञान विभाग

Scanned By Scanner Go